# 12

# विभागीय खाते

## (DEPARTMENTAL ACCOUNTS)

### अध्ययन परिणाम (Learning Outcomes)

इस अध्याय के अध्ययन पश्चात् आप निम्नलिखित के लिए समर्थ होंगे :

1. संगठन के सामान्य व्ययों को विभिन्न विभागों के मध्य उपयुक्त आधार पर आवंटन
2. अन्तर्विभागीय अन्तरण और उनका लेखांकन
3. लेखांकन वर्ष के अंत में अन्तर्विभागीय रहतिया पर अनुपार्जित लाभ की राशि की गणना

### अध्याय परिदृश्य (Chapter Overview)

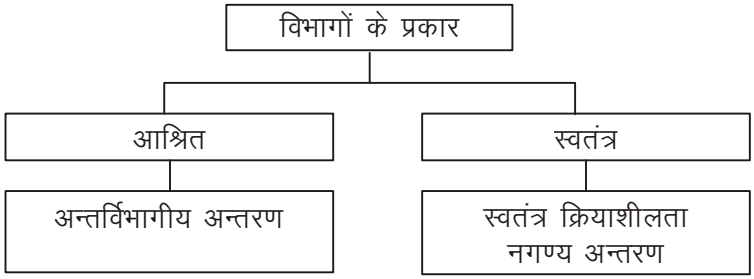


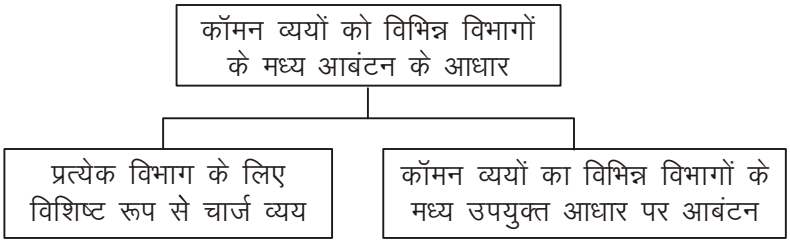


© The Institute of Chartered Accountants of India

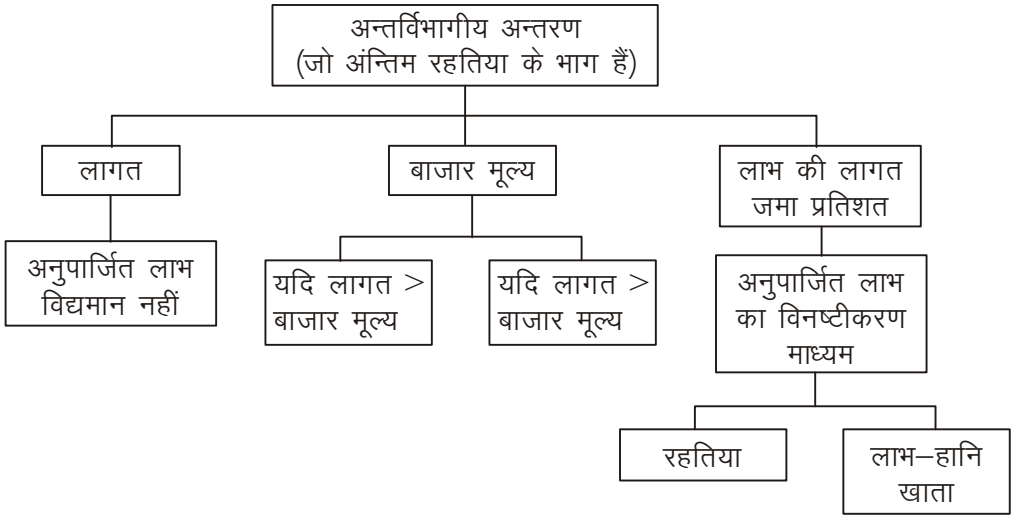


**1. परिचय** (Introduction)

यदि किसी व्यवसाय में अनेक स्वतंत्र गतिविधियाँ शामिल हों, अथवा विभिन्न विभागों में विभाजित हो, जिससे स्वतंत्र क्रियान्वयन हो सके, उसका प्रबन्धन प्रत्येक विभाग के परिणाम पृथक निर्धारित करके उनकी सापेक्षिक कार्यक्षमता को परखने में रुचि रखता है। यह केवल तभी सम्भव हो सकता है जब विभागीय खाते तैयार किये जायें। विभागीय खाते प्रबन्धन के लिये बहुत सहायक एवं उपयोगी होते हैं क्योंकि उनसे व्यवसाय को अधिक बुद्धिमत्ता और क्षमता के साथ नियंत्रित करने के लिये आवश्यक सूचनाएं प्रदान करते हैं। इससे सभी प्रकार की बर्बादी को चिन्हित करने के लिये शीघ्रता से सहायता मिलती है अर्थात् सामग्री अथवा धन की बर्बादी। व्यवसाय के विभागीय विभागों/इकाइयों के क्रियान्वयन में अपर्याप्तताओं अथवा अक्षमताओं की ओर ध्यान आकर्षित कराते हैं।

**2. विभागीय लेखांकन के लाभ** (Advantages of Department Accounting)

विभागीय लेखांकन के प्रमुख लाभ निम्नांकित हैं :

**1. निष्पादन का मूल्यांकन** : प्रत्येक विभाग का पृथक निष्पादन उनके व्यापारिक परिणामों के आधार पर किया जा सकता है। ऐसे विभाग के विक्रय को बढ़ावा देने का प्रयास करना चाहिये जो अधिकतम लाभोपार्जन कर रहा है।

**2. प्रत्येक विभाग की विकास सम्भावनाएं** : एक विभाग की विकास सम्भावनाएं अन्य की अपेक्षा मूल्यांकित की जा सकती हैं।

**3. पूँजीगत व्यय की न्यायोचित प्रयोज्यता** : प्रत्येक विभाग में पूँजीगत व्यय की न्यायोचित सम्भावनाओं का निर्धारण प्रबन्धन द्वारा किया जा सकता है।

**4. कार्यक्षमता का निर्णयन** : प्रत्येक विभाग की पृथक रहतिया आवर्त की गणना में यह सहायक होता है, और इस प्रकार प्रत्येक विभाग की कार्यक्षमता प्रकट होती है।

सामान्यतः एक संगठन अपने कार्यों को विभिन्न विभागों में विभक्त करता है, जो श्रम विभाजन के सिद्धान्त के आधार पर किया जाता है। प्रत्येक विभाग अपने पृथक खाते तैयार करता है जिससे उसका निष्पादन परखा जा सके। इससे प्रत्येक विभाग की कार्यक्षमता में सुधार लाया जा सकता है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

**3. विभागीय लेखांकन की पद्धतियाँ** (Methods of Departmental Accounting) : विभागीय खातों के अनुरक्षण की दो पद्धतियाँ हैं :

**3.1 सभी विभागों के खाते केवल एक ही पुस्तक में रखे जायें**

ऐसे खातों की रचना के लिये सर्वप्रथम यह आवश्यक होगा कि प्रत्येक विभाग के आय–व्यय सहायक पुस्तकों में पृथक रिकॉर्ड किये जायें और तत्पश्चात उनको खातों में पृथक शीर्षकों के अधीन संचित किया जाय। यह कालम वाली सहायक पुस्तकें और कालम वाले खातों के द्वारा किया जा सकता है।

**3.2 प्रत्येक विभाग के लिये पृथक खातों के सेट रखे जायें**

प्रत्येक विभाग के लिये पृथक पुस्तकों का सेट रखा जाय, जिसमें प्रत्येक विभाग से प्राप्त अथवा अंतरित माल का पूरा हिसाब रखने के साथ विक्रय का भी पृथक लेखांकन किया जाय।

ऐसा होते हुए भी, जब विभिन्न विभागों के लिये पुस्तकों का पृथक सेट रखा जाता है, विभिन्न विभागों के मध्य कामन व्ययों के आवंटन के लिये उपयुक्त आधार प्रणाली का भी होना आवश्यक है, यदि कोई संगठन सकल लाभ के अतिरिक्त शुद्ध लाभ भी विभागीय आधार पर जानने में रुचि रखता है।

**4. कॉमन व्ययों का विभिन्न विभागों में आवंटन का आधार** (Basis of Allocation of Common Expenditure Among Different Departments)

विभिन्न विभागों के मध्य व्ययों का आवंटन विवेकपूर्ण आधार पर विभागीय खातों की तैयारी के समय किया जाता है।

**पृथक पहचान योग्य व्यय** : किसी विभाग विशेष के लिये किये गये प्रत्यक्ष रूप से उसी विभाग से वसूल किये जाते हैं जैसे विभागीय रहतिया के बीमा व्यय।

**कॉमन व्यय** : कॉमन व्यय, जिसके लाभ / उपयोग सभी विभागों द्वारा प्रयोग किये जाते हैं और जिनका सूक्ष्म रूप से आवंटन किया जा सके उन्हें सम्बन्धित विभागों के मध्य न्याय संगत आधार पर जो, परिस्थितियों अनुसार उपयुक्त हो, आवंटित किया जा सकता है।

**व्ययों का आवंटन**

| व्यय | आधार |
|---|---|
| 1. किराया रेट्स एवं कर, मरम्मत एवं अनुरक्षण भवन का बीमा | प्रत्येक विभाग द्वारा प्रयुक्त क्षेत्रफल (यदि उपलब्ध हो) अन्यथा समय के आधार पर |
| 2. लाइटिंग एवं हीटिंग व्यय, जैसे उष्माकरण व्यय | प्रत्येक विभाग द्वारा ऊर्जा उपयोग आधार पर |
| 3. विक्रय व्यय, जैसे कटौती, अप्राप्त ऋण, विक्रय कमीशन, बाह्य भाड़ा, विक्रय प्रबन्धक वेतन एवं अन्य लागतें | प्रत्येक विभाग का विक्रय |
| 4. आन्तरिक ढुलाई/प्राप्त कटौती | प्रत्येक विभाग का क्रय |
| 5. मजदूरी एवं वेतन | प्रत्येक विभाग में प्रयुक्त समय |
| 6. प्रशासनिक एवं अन्य व्यय जैसे प्रबन्धक का वेतन, कॉमन | समय आधार पर अथवा समानुपात में |
| 7. विज्ञापन आदि | |
| 8. श्रम कल्याण व्यय | प्रत्येक विभाग के कर्मचारियों की संख्या |
| 9. PF/ESI अंशदान | प्रत्येक विभाग की मजदूरी एवं वेतन |

© The Institute of Chartered Accountants of India

**नोट** : वित्तीय प्रकृति के ऐसे कुछ व्यय एवं आय हैं, जिनका उपयुक्त आधार पर आवंटन नहीं किया जा सकता है, अतः उन्हें लाभ–हानि खाते से वसूल करना उपयुक्त होगा जैसे ऋणों पर ब्याज, निवेशों के विक्रय पर लाभ/हानियाँ आदि।

**5. विभागों के प्रकार** (Types of Department)

दो प्रकार के विभाग होते हैं : आश्रित एवं स्वतंत्र विभाग :

**5.1 स्वतंत्र विभाग :**

ऐसे विभाग जो एक दूसरे से पृथक कार्य करते हैं, जिनके मध्य नगण्य अन्तर्विभागीय अन्तरण होते हैं, स्वतंत्र विभाग कहलाते हैं।

**5.2 आश्रित विभाग :**

ऐसे विभाग जो एक विभाग से दूसरे विभाग को माल का अंतरण आगे प्रक्रियाकरण के लिये करते हैं आश्रित विभाग कहलाते हैं। यहाँ एक विभाग का उत्पादन विभाग का इनपुट बन जाता है। इनका अंतरण लागत मूल्य पर अथवा अन्य पूर्व निर्णीत विक्रय मूल्य पर किया जाता है। ऐसा मूल्य जिस पर माल भेजा जाता है उसे अंतरण मूल्य कहा जाता है। ऐसे विभागों में उतराई अपेक्षित होती है यदि अन्तरण मूल्य में लाभ का तत्व होता है। अगले पैरा में अनुपार्जित लाभ के विनष्टीकरण सम्बन्धी प्रणालियों की विवेचना की गयी है।

**6. अन्तर्विभागीय अंतरण** (Inter Departmental Transfers)

जब भी माल या सेवाओं की पूर्ति एक विभाग से दूसरे विभाग को की जाती है, उनकी लागत को पृथक रिकॉर्ड किया जाना चाहिये और उसको लाभार्थी विभागों से वसूल किया जाता है और पूर्तिकर्ता विभाग को क्रेडिट किया जाता है। ऐसे लाभों का योग (अन्तर्विभागीय अन्तरण) को विभागीय लाभ–हानि खाते में प्रकट किया जाना चाहिये, जिससे अन्य व्ययों की मदों से उन्हें पृथक किया जा सके।

**6.1 अन्तर्विभागीय अन्तरण का आधार**

माल या सेवाओं को एक विभाग द्वारा दूसरे विभाग को सामान्यतः निम्नांकित तीन आधारों पर वसूल किये जाते हैं :

(i) लागत

(ii) प्रचलित बाजार मूल्य

(iii) लागत + लाभ का सहमत प्रतिशत

**6.2 अनुपार्जित लाभ का विनष्टीकरण**

जब अन्तर्विभागीय अन्तरण में लाभ जोड़ा जाता है। वर्ष के अन्त में गैर बिके माल में लोडिंग जुड़ी रहती है, जिसको अंतिम खाते बनाने से पूर्व पृथक करना आवश्यक है, जिसके कोई आन्तरिक लाभ उनमें शामिल नहीं रहे।

© The Institute of Chartered Accountants of India

### 6.3 रहतिया संचय

लेखांकन वर्ष के अन्त में रहतिया में शामिल अनुपार्जित लाभ को विनष्ट करने के लिये उपयुक्त रहतिया संचय खाते को क्रेडिट और संयुक्त हानि खाते को डेबिट किया जाता है। रहतिया संचय की राशि की गणना निम्न प्रकार की जायेगी :

$$\frac{\text{बिना बिके माल का अन्तरण मूल्य} \times \text{अंतरण में शामिल लाभ}}{\text{अंतरण मूल्य}}$$

### 6.4 जर्नल प्रविष्टियाँ

लेखांकन वर्ष के अंत में निम्नांकित जर्नल प्रविष्ट द्वारा स्टॉक में शामिल अनुपार्जित लाभ को (स्टॉक संचय सृजन द्वारा) पृथक किया जा सकता है

P & L A/c Dr.

To stock Reserve

(Being provision made in respect of unrealised profit in closing stock)

अगले लेखांकन वर्ष के प्रारम्भ में उपरोक्त जर्नल प्रविष्टि का विपरीत लेखा किया जायेगा :

Stock Reserve Dr.

To P & L A/c

(Being provision for unrealised profit reserved)

### 6.5 आर्थिक चिट्ठे में प्रकटीकरण

बिना बिका अंतिम रहतिया जो अन्य विभाग से प्राप्त किया गया है निम्नांकित रूप में आर्थिक चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष की ओर निम्न प्रकार प्रदर्शित किया जायेगा

| | | |
|---|---|---|
| चालू सम्पत्तियाँ | | xxx |
| रहतिया | xx | |
| घटाओ : रहतिया संचय | (–) (–) | शेष राशि |

**7. मेमोरेण्डम रहतिया और मेमोरेण्डम मार्कअप खाता प्रणाली** (Memorandum Stock and Memorandum mark up Account Method)

इस प्रणाली के अधीन प्रत्येक विभाग को पूरित माल को 'मेमोरेण्डम विभागीय रहतिया खाते' में बढ़ी हुई (मार्क अप) लागत पर डेबिट किया जाता है, जिससे माल सामान्य विक्रय मूल्य पर प्राप्त हो सके। विभाग के विक्रय को 'मेमोरेण्डम विभागीय रहतिया खाते' में क्रेडिट किया जाता है और 'मार्कअप' की राशि को 'विभागीय मार्कअप' खाते में क्रेडिट किया जाता है। जब विक्रय मूल्य को सामान्य विक्रय मूल्य से कम करने की आवश्यकता प्रतीत होती है ऐसी कमी (मार्कडाउन) की राशि की 'मेमोरेण्डम स्टाक खाता और 'मार्कअप खाते' में प्रविष्टि की जाती है। इस प्रणाली से विभिन्न विभागों के स्टाक मूवमेंट पर प्रभावी नियंत्रण रखने में सहायता मिलती है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

**8. विभिन्न उदाहरण** (Miscellaneous Illustrations)

**उदाहरण :**

P विभाग से Q विभाग के रहतिया का अंतरण लागत + 50% के मूल्य पर किया जाता है। यदि विभाग Q का रहतिया ₹ 27,000 हो तब, रहतिया संचय की राशि की गणना कीजिये।

| | ₹ |
|---|---|
| विभाग Q का अंतिम रहतिया | 27,000 |
| विभाग P द्वारा विभाग Q को माल लागत + 50% पर भेजा जाता है | |
| अतः विभाग P का रहतिया में शामिल लाभ होगा : $\frac{27,000 \times 50}{150}$ | 9,000 |
| रहतिया संचय की राशि = ₹ 9,000 होगी। | |

**क्रियात्मक टिप्पणी :**

विभाग P द्वारा विभाग Q को माल लागत + 50% पर भेजा जाता है। अतः यदि लागत ₹ 100 है लाभ = 50 और अंतरण मूल्य = 150 होगा। अतः विभाग P का लाभ जो विभाग Q के रहतिया में शामिल है, विक्रय मूल्य का एक तिहाई है।

**उदाहरण 2**

Z Ltd. के तीन विभाग हैं, उन्होंने 31 मार्च 20X1 को समाप्त वर्ष के लिये निम्नांकित सूचनाएं प्रस्तुत की हैं :

| | A | B | C | Total (₹) |
|---|---|---|---|---|
| क्रय (इकाइयाँ) | 6,000 | 12,000 | 14,400 | |
| क्रय (राशि) | | | | 6,00,000 |
| विक्रय (इकाइयाँ) | 6,120 | 11,520 | 14,976 | |
| विक्रय मूल्य (प्रति इकाई) | 40 | 45 | 50 | |
| अंतिम रहतिया (इकाइयाँ) | 600 | 960 | 36 | |

आपसे अपेक्षित है कि Z Ltd. का विभागीय ट्रेडिंग खाता यह मानते हुए बनाइए कि प्रत्येक मामले में विक्रय पर लाभ की दर समान है :

© The Institute of Chartered Accountants of India

**उत्तर**

31 मार्च, 20X1 को समाप्त वर्ष के लिये विभागीय लाभ–हानि खाता

| Paticulars | A | B | C | Particulars | A | B | C |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| To Opening Stock (W.N.4) | 11,520 | 8,640 | 12,240 | By Sales A-6120×40 B-11,520×45 C-14,976×50 | 2,44,800 | 5,18,400 | 7,48,800 |
| To Purchases (W.N.2) | 96,000 | 2,16,000 | 2,88,000 | By Closing Stock (W.N.4) | 9,600 | 17,280 | 720 |
| To Gross Profit (b.f.) | 1,46,880 | 3,11,040 | 4,49,280 | | | | |
| | 2,54,400 | 5,35,680 | 7,49,520 | | 2,54,400 | 5,35,680 | 7,49,520 |

**(1) क्रियात्मक टिप्पणियाँ**

| लाभ अनुपात | ₹ |
|---|---|
| क्रयीत इकाइयों का विक्रय मूल्य : | |
| विभाग A 6,000 × 40 | 2,40,000 |
| विभाग B 12,000 × 45 | 5,40,000 |
| विभाग C 14,400 × 50 | 7,20,000 |
| कुल विक्रय मूल्य | 15,00,000 |
| घटाओ : क्रय (लागत) मूल्य | (6,00,000) |
| सकल लाभ | 9,00,000 |
| लाभ का अनुपात $= \frac{9,00,000}{15,00,000} = 60\%$ | |

**(2) प्रति इकाई लागत एवं क्रय लागत प्रदर्शक विभागानुसार विवरण**

| | A | B | C |
|---|---|---|---|
| | ₹ | ₹ | ₹ |
| विक्रय मूल्य (प्रति इकाई) (₹) | 40 | 45 | 50 |
| घटाओ : लाभ अनुपात @ 60% (₹) | | | |
| सभी विभागों के लिये लाभ का अनुपात 60% समान है | (24) | (27) | (30) |
| प्रति इकाई क्रय मूल्य (₹) | 16 | 18 | 20 |
| क्रयीत इकाइयों की संख्या | 6,000 | 12,000 | 14,400 |
| (प्रति इकाई क्रय लागत × क्रयीत इकाइयाँ) | 96,000 | 2,16,000 | 2,88,000 |

© The Institute of Chartered Accountants of India

**(3) विभागीय प्रारम्भिक रहतिया (इकाइयों में) प्रदर्शक विवरण**

| | A | B | C |
|---|---|---|---|
| विक्रय (इकाइयाँ) | 6,120 | 11,520 | 14,976 |
| जोड़ो : अंतिम रहतिया (इकाइयाँ) | 600 | 960 | 36 |
| | 6,720 | 12,480 | 15,012 |
| घटाओ : क्रय (इकाइयाँ) | (6,000) | (12,000) | (14,400) |
| प्रारम्भिक रहतिया (इकाइयाँ) | 720 | 480 | 612 |

**(4) प्रारम्भिक एवं अंतिम रहतिया की विभागानुसार लागत प्रदर्शक विवरण**

| | A | B | C |
|---|---|---|---|
| प्रारम्भिक रहतिया की लागत (₹) | 720 × 16 | 480 × 18 | 612 × 20 |
| | 11,520 | 8,640 | 12,240 |
| अंतिम रहतिया की लागत (₹) | 600 × 16 | 960 × 18 | 36 × 20 |
| | 9,600 | 17,280 | 720 |

**उदाहरण 3**

ब्रह्मा लि. के तीन विभाग हैं उन्होंने निम्नांकित सूचनाएं 31 मार्च, 20X1 को समाप्त वर्ष के लिये प्रस्तुत की हैं :

| विवरण | A | B | C | Total (₹) |
|---|---|---|---|---|
| क्रय (इकाइयाँ) | 5,000 | 10,000 | 15,000 | |
| क्रय (राशि) | | | | 8,40,000 |
| विक्रय (इकाइयाँ) | 5,200 | 9,800 | 15,300 | |
| विक्रय मूल्य (प्रति इकाई ₹) | 40 | 45 | 50 | |
| अंतिम रहतिया (इकाइयाँ) | 400 | 600 | 700 | |

आपसे अपेक्षित है कि विभागीय व्यापारिक खाता यह मानते हुए ब्रह्मा लि. की पुस्तकों में तैयार कीजिये कि सभी मामलों में विक्रय पर लाभ की दर एक समान है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

उत्तर

**31 मार्च 20X1 को समाप्त वर्ष के लिये विभागीय ट्रेडिंग खाता**

| Paticulars | A | B | C | Particulars | A | B | C |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ₹ | ₹ | ₹ | | ₹ | ₹ | ₹ |
| To Opening Stock (W.N.4) | 14,400 | 10,800 | 30,000 | By Sales<br>A-5,200 × 40<br>B-9,800 × 45<br>C-15,300 × 50 | 2,08,000 | 4,41,000 | 7,65,000 |
| | | | | By Closing Stock (W.N.4) | 9,600 | 16,200 | 21,000 |
| To Purchases (W.N.2) | 1,20,000 | 2,70,000 | 4,50,000 | | | | |
| To Gross Profit (b.f.) | 83,200 | 1,76,400 | 3,06,000 | | | | |
| | 2,17,600 | 4,57,200 | 7,86,000 | | 2,17,600 | 4,57,200 | 7,86,000 |

क्रियात्मक टिप्पणियाँ

**(1) लाभ का अनुपात**

| क्रयीत इकाइयों का विक्रय मूल्य | ₹ |
|---|---|
| विभाग A (5,000 इकाइयाँ × ₹ 40) | 2,00,000 |
| विभाग B (10,000 इकाइयाँ × ₹ 45) | 4,50,000 |
| विभाग C (15,000 इकाइयाँ × ₹ 50) | 7,50,000 |
| क्रयीत इकाइयों का विक्रय मूल्य | 14,00,000 |
| घटाओ : क्रय | (8,40,000) |
| सकल लाभ | 5,60,000 |

$$\text{लाभ का अनुपात} = \frac{\text{सकल लाभ}}{\text{विक्रय मूल्य}} \times 100 = \frac{5,60,000}{14,00,000} \times 100 = 40\%$$

© The Institute of Chartered Accountants of India

**(2) प्रति इकाई क्रय मूल्य एवं क्रय मूल्य विभागीय लागत प्रदर्शक विवरण**

| विवरण | A | B | C |
|---|---|---|---|
| विक्रय मूल्य प्रति इकाई (₹) | 40 | 45 | 50 |
| घटाओ : लाभ अनुपात | (16) | (18) | (20) |
| सभी विभागों में एक समान है | | | |
| क्रय मूल्य प्रति इकाई (₹) | 24 | 27 | 30 |
| क्रयीत इकाइयों की संख्या | 5,000 | 10,000 | 15,000 |
| क्रय प्रति इकाई क्रय लागत × क्रयीत इकाइयाँ | 120,000 | 2,70,000 | 4,50,000 |

**(3) विभागानुसार प्रारम्भिक रहतिया की गणना प्रदर्शक विवरण**

| विवरण | A | B | C |
|---|---|---|---|
| विक्रय (इकाइयाँ) | 5,200 | 9,800 | 15,300 |
| जोड़ो : अंतिम रहतिया (इकाइयाँ) | 400 | 600 | 700 |
| | 5,600 | 10,400 | 16,000 |
| घटाओ : क्रय (इकाइयाँ) | (5,000) | (10,000) | (15,000) |
| प्रारम्भिक रहतिया (इकाइयाँ) | 600 | 400 | 1,000 |

**(4) विभागानुसार प्रारम्भिक एवं अंतिम रहतिया प्रदर्शक विवरण**

| विवरण | A | B | C |
|---|---|---|---|
| प्रारम्भिक रहतिया की लागत (₹) | 600 × 24 | 400 × 27 | 1,000 × 30 |
| | 14,400 | 10,800 | 30,000 |
| अंतिम रहतिया की लागत | 400 × 24 | 600 × 27 | 700 × 30 |
| | 9,600 | 16,200 | 21,000 |

**उदारहण 4**

मै. ओमेगा एक विभागीय स्टोर है जिसके तीन विभाग हैं X, Y और Z। 31 मार्च 20X1 को समाप्त वर्ष के लिये तीनों विभागों की सूचनाएँ आगे प्रस्तुत हैं :

© The Institute of Chartered Accountants of India

| | X | Y | Z |
|---|---|---|---|
| | ₹ | ₹ | ₹ |
| प्रारम्भिक रहतिया | 36,000 | 24,000 | 20,000 |
| क्रय | 1,32,000 | 88,000 | 44,000 |
| अंतिम देनदार | 15,000 | 10,000 | 10,000 |
| विक्रय | 1,80,000 | 1,35,000 | 90,000 |
| अंतिम रहतिया | 45,000 | 17,500 | 21,000 |
| प्रत्येक विभाग में फर्नीचर का मूल्य | 20,000 | 20,000 | 10,000 |
| प्रत्येक विभाग द्वारा प्रयुक्त क्षेत्रफल (वर्ग फुट में) | 3,000 | 2,500 | 2,000 |
| प्रत्येक विभाग में कर्मचारियों की संख्या | 25 | 20 | 15 |
| प्रत्येक विभाग द्वारा प्रयुक्त बिजली (इकाइयों में) | 300 | 200 | 100 |

वर्ष के लिये अन्य राजस्व मदों के शेष नीचे प्रस्तुत हैं :

| | Amount (₹) |
|---|---|
| आन्तरिक ढुलाई | 3,000 |
| बाह्य ढुलाई | 2,700 |
| वेतन | 48,000 |
| विज्ञापन | 2,700 |
| स्वीकृत कटौती | 2,250 |
| प्राप्त कटौती | 1,800 |
| किराया, रेट्स एवं कर | 7,500 |
| फर्नीचर पर ह्रास | 1,000 |
| बिजली व्यय | 3,000 |
| श्रम कल्याण व्यय | 2,400 |

आपसे अपेक्षित है कि आप विभागीय ट्रेडिंग एवं लाभ–हानि खाता 31 मार्च 20X1 को समाप्त वर्ष के लिये, अप्राप्त ऋणों के लिये 5% आयोजन के साथ बनाइये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

हल :

## मै. ओमेगा की पुस्तकें
## Departmental Trading and Profit and Loss Account
## for the year ended 31st March, 20X1

| Particulars | Deptt. X | Deptt. Y | Deptt. Z | Total | Particulars | Deptt. X | Deptt. Y | Deptt. Z | Total |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | ₹ | ₹ | ₹ | ₹ | | ₹ | ₹ | ₹ | ₹ |
| To Stock (opening) | 36,000 | 24,000 | 20,000 | 80,000 | By Sales | 1,80,000 | 1,35,000 | 90,000 | 4,05,000 |
| To Purchases | 1,32,000 | 88,000 | 44,000 | 2,64,000 | By Stock (closing) | 45,000 | 17,5000 | 21,000 | 83,500 |
| To Carriage Inwards | 1,500 | 1,000 | 500 | 3,000 | | | | | |
| To Gros Profit c/d (b.f.) | 55,500 | 39,500 | 46,500 | 1,41,500 | | | | | |
| | 2,25,000 | 1,52,500 | 1,11,000 | 4,88,500 | | 2,25,000 | 1,52,500 | 1,11,000 | 4,88,500 |
| To Carriage Outwards | 1,200 | 900 | 600 | 2,700 | By Gross Profit b/d | 55,500 | 39,500 | 46,500 | 1,41,500 |
| To Electricity | 1,500 | 1,000 | 500 | 3,000 | By Discount received | 900 | 600 | 300 | 1,800 |
| To Salaries | 20,000 | 16,000 | 12,000 | 48,000 | | | | | |
| To Advertisement | 1,200 | 900 | 600 | 2,700 | | | | | |
| To Discount allowed | 1,000 | 750 | 500 | 2,250 | | | | | |
| To Rent, Rates and Taxes | 3,000 | 2,500 | 2,000 | 7,500 | | | | | |
| To Depreciation | 400 | 400 | 200 | 1,000 | | | | | |
| To Provision for Bad Debts @ 5% of debtors | 750 | 500 | 500 | 1,750 | | | | | |
| To Labour welfare expenses | 1,000 | 800 | 600 | 2,400 | | | | | |
| To Net Profit (b.f.) | 26,350 | 16,350 | 29,300 | 72,000 | | | | | |
| | 56,400 | 40,100 | 46,800 | 1,43,300 | | 56,400 | 40,100 | 46,800 | 1,43,300 |

© The Institute of Chartered Accountants of India

**क्रियात्मक टिप्पणी**

| व्ययों के आवंटन का आधार | |
|---|---|
| आंतरिक ढुलाई | क्रय (3 : 2 : 1) |
| बाह्य ढुलाई | आवर्त (4 : 3 : 2) |
| वेतन | कर्मचारियों की संख्या (5 : 4 : 3) |
| विज्ञापन | आवर्त (4 : 3 : 2) |
| स्वीकृत कटौती | आवर्त (4 : 3 : 2) |
| प्राप्त कटौती | क्रय (3 : 2 : 1) |
| किराया रेट्स एवं कर | प्रयुक्त फर्श क्षेत्रफल (6 : 5 : 4) |
| फर्नीचर पर ह्रास | फर्नीचर का मूल्य (2 : 2 : 1) |
| श्रम कल्याण व्यय | कर्मचारी संख्या (5 : 4 : 3) |
| बिजली व्यय | उपभोग इकाइयाँ (3 : 2 : 1) |
| अप्राप्त ऋण का प्रावधान | देनदार शेष (3 : 2 : 2) |

**उदाहरण 5**

मै. X के दो विभाग हैं A और B 31 दिसम्बर, 20X1 को समाप्त वर्ष के लिये निम्नांकित सूचनाओं से एकीकृत व्यापारिक एवं विभागीय व्यापारिक खाता तैयार कीजिये।

| | A | B |
|---|---|---|
| | ₹ | ₹ |
| प्रारम्भिक रहतिया (लागत मूल्य पर क्रयीत माल सहित) | 20,000 | 12,000 |
| क्रय | 92,000 | 68,000 |
| विक्रय | 1,40,000 | 1,12,000 |
| मजदूरी | 12,000 | 8,000 |
| ढुलाई | 2,000 | 2,000 |
| अंतिम रहतिया | | |
| (i) क्रयीत माल | 4,500 | 6,000 |
| (ii) तैयार माल | 24,000 | 14,000 |
| क्रयीत माल का अन्तरण: | | |
| B से A को | 10,000 | |
| A से B को | | 8,000 |

© The Institute of Chartered Accountants of India

तैयार माल का अंतरणः

| | | |
|---|---|---|
| A से B को | 35,000 | |
| B से A को | | 40,000 |

तैयार माल की वापसी

| | | |
|---|---|---|
| A से B को | 10,000 | |
| B से A को | | 7,000 |

आपको सूचित किया गया है कि क्रयीत माल का आपसी अन्तरण सम्बन्धित विभाग की क्रय लागत पर और तैयार माल विभागीय बाजार मूल्य पर प्रत्येक विभाग के तैयार माल को 20% अंतिम रहतिया में अन्य विभाग से प्राप्त तैयार माल है।

**हल :**

**M/s X**

**Departmental Trading A/c for the year ending 31st December, 20X1**

| | Deptt. A ₹ | Deptt. B ₹ | | Deptt. A ₹ | Deptt. B ₹ | |
|---|---|---|---|---|---|---|
| To Stock | 20,000 | 12,000 | By Sales | 1,40,000 | 1,12,000 | |
| To Purchases | 92,000 | 68,000 | By Purchased Goods transferred | 8,000 | 10,000 | |
| To Wages | 12,000 | 8,000 | By Finished Goods transferred | 35,000 | 40,000 | |
| To Carriage | 2,000 | 2,000 | By Return of finished Goods | 10,000 | 7,000 | |
| To Purchased Goods transferred | 10,000 | 8,000 | By Closing Stock : Purchased Goods | 4,500 | 6,000 | |
| To F.G. transferred | 40,000 | 35,000 | Finished Goods | 24,000 | 14,000 | |
| To Return of finished Goods | 7,000 | 10,000 | | | | |
| To Gross profit c/d (b.f.) | 38,500 | 46,000 | | | | |
| | 2,21,500 | 1,89,000 | | 2,21,500 | 1,89,000 | |

**Consolidated Trading Account for the year ending 31st Deember, 20X1**

| Particular | ₹ | Particulars | ₹ |
|---|---|---|---|
| To Opening Stock | 32,000 | By Sales | 2,52,000 |
| To Purchases | 1,60,000 | By Closing Stock : | |
| To Wages | 20,000 | Purchased Goods | 10,500 |
| To Carriage | 4,000 | Finished Goods | 38,000 |
| To Stock Reserve | 2,196 | | |
| To Gross Profit c/d | 82,304 | | |
| | 3,00,500 | | 3,00,500 |

© The Institute of Chartered Accountants of India

**क्रियात्मक टिप्पणी**

| | Deptt. A | Deptt. B |
|---|---|---|
| विक्रय | 1,40,000 | 1,12,000 |
| जोड़ो : अन्तरण | 35,000 | 40,000 |
| | 1,75,000 | 1,52,000 |
| घटाओ : वापसी | (7,000) | (10,000) |
| शुद्ध विक्रय + अन्तरण | 1,68,000 | 1,42,000 |
| सकल लाभ की दर $\frac{38,500}{1,68,000}\times 100 = 22.916\%$ | | $\frac{46,000}{1,42,000}\times 100 = 32.394\%$ |
| अंतरण से अंतिम रहतिया | 4,800 | 2,800 |
| (20% अंतिम रहतिया) | | |
| अनुपार्जित लाभ | ₹ 4,800 × 32.394% = 1,555 | 2,800 × 22.916% = ₹ 641 |

**उदाहरण 6**

विभाग P द्वारा विभाग S को लागत पर 25% लाभ सहित माल बेचा जाता है और विभाग Q को लागत पर 15% लाभ पर बेचा जाता है। विभाग S द्वारा माल का विक्रय विभाग P एवं Q को विक्रय पर 20% और 30% लाभ पर क्रमशः विक्रय किया जाता है। विभाग Q द्वारा माल का विक्रय P और S को लागत मूल्य पर 20% एवं 10% लाभ पर क्रमशः विक्रय किया जाता है।

विभागीय प्रबन्धकों को ऐसे शुद्ध लाभ के 10% कमीशन का अधिकार है, जो विभागीय विक्रय को घटाने के पश्चात प्राप्य है। विभागीय लाभ प्रबन्धकों के कमीशन पश्चात तुरन्त अनुपार्जित लाभ के समायोजन से पूर्व निम्नांकित है :

| | ₹ |
|---|---|
| विभाग P | 90,000 |
| विभाग S | 60,000 |
| विभाग Q | 45,000 |

विभिन्न विभागों के पास वर्ष के अन्त में रहतिया इस प्रकार है :

| | राशि (₹) | | |
|---|---|---|---|
| | विभाग | | |
| | P | S | Q |
| P से अंतरित | — | 18,000 | 14,000 |
| S से अंतरित | 48,000 | — | 38,000 |
| Q से अंतरित | 12,000 | 8,000 | — |

प्रबन्धकों के लाभ पश्चात विभागों का सही लाभ ज्ञात कीजिये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

हल :

शुद्ध विभागीय लाभों की गणना

| | विभाग P (₹) | विभाग S (₹) | विभाग Q (₹) |
|---|---|---|---|
| प्रबन्धकों के कमीशन पश्चात लाभ | 90,000 | 60,000 | 45,000 |
| जोड़ो : प्रबन्धकों का कमीशन | 10,000 | 6,667 | 5,000 |
| | 1,00,000 | 66,667 | 50,000 |
| घटाओ : रहतिया पर अनुपार्जित लाभ | (5,426) | (21,000) | (2,727) |
| प्रबन्धकों के कमीशन पूर्व लाभ | 94,574 | 45,667 | 47,273 |
| घटाओ : प्रबन्धकों का कमीशन | (9,457) | (4,567) | (4,727) |
| प्रबन्धकों के कमीशन पश्चात शुद्ध लाभ | 85,117 | 41,100 | 42,546 |

**क्रियात्मक टिप्पणी**

| | विभाग P (₹) | विभाग S (₹) | विभाग Q (₹) | कुल (₹) |
|---|---|---|---|---|
| अनुपार्जित लाभ : | | | | |
| विभाग P | — | 25/125 × 18,000 = 3,600 | 15/115 × 14,000 = 1,826 | 5,426 |
| विभाग S | 20/100 × 48,000 = 9,600 | — | 30/100 × 38,000 = 11,400 | 21,000 |
| विभाग Q | 20/120 × 12,000 = 2,000 | 10/110×8,000 = 727 | | 2,727 |

**उदाहरण 7**

मै. सुमन एण्टरप्राइजेज के दो विभाग हैं फिनिश्ड लैदर और जूता/जूतों का निर्माण फर्म के लैटर विभाग द्वारा पूरित माल से स्वयं किया जाता है ऐसी पूर्ति सामान्य विक्रय मूल्य पर की जाती है। निम्नांकित समंकों से विभागीय व्यापारिक एवं लाभ–हानि खाता 31 मार्च, 20X3 को समाप्त वर्ष के लिये बनाइए :

© The Institute of Chartered Accountants of India

| | फिनिश्ड लैदर विभाग (₹) | जूता विभाग (₹) |
|---|---|---|
| प्रारम्भिक रहतिया (As on 0.1.04.20X2) | 30,20,000 | 4,30,000 |
| क्रय | 1,50,00,000 | 2,60,000 |
| विक्रय | 1,80,00,000 | 45,20,000 |
| जूता विभाग को अंतरण | 30,00,000 | |
| निर्माणी व्यय | — | 5,00,000 |
| विक्रय व्यय | 1,50,000 | 60,000 |
| किराया एवं भण्डारण | 5,00,000 | 3,00,000 |
| रहतिया 31.03.20X3 | 12,20,000 | 5,00,000 |

विचारार्थ निम्नांकित अतिरिक्त सूचनाएं उपलब्ध हैं :

(i) जूता विभाग के रहतिया मूल्य में 75% लेदर एवं 25% अन्य व्यय माने जा सकते हैं।

(ii) फिनिश्ड लैदर विभाग ने 20X1-02 में @ 15% सकल लाभ उपार्जित किया।

(iii) सम्पूर्ण व्यवसाय के सामान्य व्यय की राशि ₹ 8,50,000 है।

**उत्तर**

**विभागीय व्यापारिक एवं लाभ–हानि खाता**

**31 मार्च, 20X3 को समाप्त वर्ष के लिये**

| Particulars | Finished leather (₹) | Shoes (₹) | Total (₹) | Particulars | Finished leather (₹) | Shoes (₹) | Total (₹) |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| To Opening Stock | 30,20,000 | 4,30,000 | 34,50,000 | By Sales | 1,80,00,000 | 45,20,000 | 2,25,20,000 |
| To Purchases | 1,50,00,000 | 2,60,000 | 1,52,60,000 | By Transfer to shoes Deptt. | 30,00,000 | — | 30,00,000 |
| To Transfer from Leather Department | | 30,00,000 | 30,00,000 | By Closing stock | 12,20,000 | 5,00,000 | 17,20,000 |
| To Manufacturing expenses | | 5,00,000 | 5,00,000 | | | | |
| To Gross Profit c/d (b.f.) | 42,00,000 | 8,30,000 | 50,30,000 | | | | |
| | 2,22,20,000 | 50,20,000 | 2,72,40,000 | | 2,22,20,000 | 50,20,000 | 2,72,40,000 |
| To Selling expenses | 1,50,000 | 60,000 | 2,10,000 | By Gross Profit b/f | 42,00,000 | 8,30,000 | 50,30,000 |
| To Rent & warehousing | 5,00,000 | 3,00,000 | 8,00,000 | | | | |
| To Net profit (b.f.) | 35,50,000 | 4,70,000 | 40,20,000 | | | | |
| | 42,00,000 | 8,30,000 | 50,30,000 | | 42,00,000 | 8,30,000 | 50,30,000 |

© The Institute of Chartered Accountants of India

**General Profit and Loss Account**

| Particulars | Amount ₹ | Particulars | Amount ₹ |
|---|---|---|---|
| To Genral expenses | 8,50,000 | By Net Profit | 40,20,000 |
| To Unrealised profit (Refer W.N.) | 26,625 | | |
| To General net profit (Bal. fig.) | 31,43,375 | | |
| | 40,20,000 | | 40,20,000 |

**क्रियात्मक टिप्पणियाँ :**

**रहतिया संचय की गणना**

वर्ष 20X2-3 के लिये लैदर विभाग के सकल लाभ की दर की गणना

$= \frac{\text{सकल लाभ}}{\text{कुल विक्रय}} \times 100 = [(42,00,000)/(1,80,00,000 + 30,00,000)] \times 100 = 20\%$

जूता विभाग में लैदर विभाग का अंतिम रहतिया = 75%

अर्थात् ₹ 5,00,000 × 75% = ₹ 3,75,000

अंतिम रहतिया पर अनुपार्जित लाभ के लिये अपेक्षित 20% रहतिया संचय

₹ 3,75,000 × 20% = ₹ 75,000

जूता विभाग के प्रारम्भिक रहतिया में अनुपार्जित लाभ के लिये रहतिया संचय की राशि @ 15% लाभ पर

(₹ 4,30,000 × 75% × 15%) = ₹ 48,375

वर्ष के दौरान अपेक्षित अतिरिक्त रहतिया संचय = ₹ 75,000 – ₹ 48,375 = ₹ 26,625

**उदाहरण 8**

ग्राम उद्योग, एक रिटेल स्टोर के दो विभाग हैं खादी एवं सिल्क जिनके लिये रहतिया खाते और स्मारक मार्कअप खाते रखे जाते हैं। प्रत्येक विभाग को पूरित माल का लिखा रहतिया खाते में लागत + मार्कअप पर किया जाता है।

जिसको मिलाकर माल का विक्रय मूल्य होता है और विक्रय राशि अपखाता तैयार होता है यदि किसी माल के विक्रय मूल्य को उसके सामान्य विक्रय मूल्य से कम कर दिया जाय कमी को 'मार्कडाउन' खाते और विभागीय 'मार्कअप' खाते से समायोजित किया जाता है। खादी विभाग के लिये मार्कअप की दर लागत का $33\frac{1}{3}\%$ और सिल्क विभाग के लिये लागत का 50% है।

31 दिसम्बर, 20X1 को समाप्त वर्ष के लिये निम्नांकित सूचनाएं एकत्रित की गयी हैं :

| | खादी विभाग | सिल्क विभाग |
|---|---|---|
| | ₹ | ₹ |
| 1 जनवरी को लागत पर रहतिया | 10,500 | 18,600 |
| क्रय | 75,900 | 93,400 |
| विक्रय | 95,600 | 1,25,000 |

© The Institute of Chartered Accountants of India

(1) 1 जनवरी 20X1 को खादी का रहतिया में ऐसा माल शामिल है जिसका विक्रय मूल्य ₹ 1260 से मार्कडाउन किया गया था। इस माल को वर्ष में घटे हुए मूल्य पर बेचा गया है।

(2) खादी विभाग से ₹ 6,900 में खरीदा गया कुछ माल वर्ष के दौरान सिल्क विभाग को अंतरित कर दिया गया और ₹ 10350 में बेचा गया है। परिणामस्वरूप ऐसे माल की लागत यद्यपि खादी विभाग में शामिल है और विक्रय मूल्य सिल्क विभाग में क्रेडिट कर दिया गया है।

(3) वर्ष 20X1 के दौरान माल का विक्रय सम्वर्धन के लिये माल को 'मार्कडाउन' किया गया :

| | लागत | मार्कडाउन |
|---|---|---|
| | ₹ | ₹ |
| खादी | 5,600 | 360 |
| सिल्क | 10,000 | 2,000 |

सभी मार्कडाउन किया गया माल बिक गया सिवाय ₹ 5000 के सिल्क को छोड़कर जिसे ₹ 1000 से मार्कडाउन किया गया था।

(4) 31 दिसम्बर, 20X1 को रहतिया की गणना करते समय यह प्रकट हुआ कि ₹ 390 का खादी का कपड़ा गुम था जिसको अपलिखित कर दिया गया।

आपसे अपेक्षित है कि आप दोनों विभागों के लिये वर्ष 20X1 से सम्बन्धित निम्नांकित खाते तैयार करें :

(a) मेमोरेण्ड रहतिया खाता और

(b) मेमोरेण्डम मार्कअप खाता

**हल :**

**Silk Stock Account**

| | **20X1** | | ₹ | **20X1** | ₹ |
|---|---|---|---|---|---|
| To | Balance b/d | | | By Sales A/c | 1,25,000 |
| To | Cost | 18,600 | | By Mark-up A/c | 2,000 |
| | Mark-up @50% | 9,300 | 27,900 | By Balance c/d (bal. fig.) | 51,350 |
| To | Purchases | 93,400 | | | |
| | Mark-up @50% | 46,700 | 1,40,100 | | |
| To | Khadi A/c | 6,900 | | | |
| | Mark-up @50% | 3,450 | 10,350 | | |
| | | | 1,78,350 | | 1,78,350 |

© The Institute of Chartered Accountants of India

**Silk Mark-up Account**

| 20X1 | ₹ | 20X1 | ₹ |
|---|---|---|---|
| To Stock A/c | 2,000 | By Balance b/d | 9,300 |
| To Profit & Loos A/c (bal. fig.) | 41,000 | By Stock A/c | 46,700 |
| To Balance c/d [(1/3* of {51,350 + 1,000}) – 1,000] | 16,450 | By Stock A/c | 3,450 |
| | 59,450 | | 59,450 |

*लागत का 1/2 = विक्रय का 1/3

**क्रियात्मक टिप्पणियाँ**

| लाभ का सत्यापन | ₹ |
|---|---|
| विक्रय | 1,25,000 |
| जोड़ो : विक्रीत माल में मार्कडाउन | 1,000 |
| | 1,26,000 |
| सकल लाभ 1/3 | 42,000 |
| घटाओ : मार्कडाउन | (1,000) |
| पुस्तकीय सकल लाभ | 41,000 |

**Khadi Stock Account**

| 20X1 | | | ₹ | 20X1 | | | ₹ |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | To Balance b/d (10,500 + 2,240#) | | 12,740 | | By Sales | | 95,600 |
| | To Purchases | 75,900 | | | By Silk Deptt. | 6,900 | |
| | Markup @33-1/3% | 25,300 | 1,01,200 | | Mark-up A/c @33-1/3% | 2,300 | 9,200 |
| | | | | | By Loss of stock A/c | 390 | |
| | | | | | Mark-up A/c @33-1/3% | 130 | 520 |
| | | | | | By Mark-up A/c | | 360 |
| | | | | | By Balance c/d (bal. fig.) | | 8,260 |
| | | | 1,13,940 | | | | 1,13,940 |

# [(10,500 × 33-1/3%) – 1,260] = ₹ 2,240

© The Institute of Chartered Accountants of India

**Khadi Mark-up Account**

| 20X1 | | ₹ | 20X1 | | ₹ |
|---|---|---|---|---|---|
| | To Stock A/c (transfer) | 2,300 | | By Balance b/d | |
| | To Stock A/c (re-sale) | 130 | | (3,500 – 1,260) | 2,240 |
| | To Stock A/c (mark down) | 360 | | By Stock A/c | 25,300 |
| | To Profit & Loss A/c | 22,685 | | | |
| | To Balance (1/4 of ₹ 8,260) | 2,065 | | | |
| | | 27,540 | | | 27,540 |

**क्रियात्मक टिप्पणी**

| लाभ का सत्यापन | ₹ |
|---|---|
| पुस्तकीय विक्रय | 95,600 |
| जोड़ो : मार्क–डाउन (1,260 + 360) | 1,620 |
| | 97,220 |
| स्थिर विक्रय मूल्य पर सकल लाभ @ 25% on ₹ 97,220 | 24,305 |
| घटाओ : मार्क–डाउन | (1,620) |
| | 22,685 |

## सारांश

**विभागीय लेखांकन की विशेषताएं**

(i) अनुपार्जित लाभ की गणना, यदि अन्तर्विभागीय अन्तरण का माल अंतिम रहतिया में शामिल हो।

(ii) विभागीय व्यापारिक एवं लाभ–हानि खाता प्रस्तुत करना

(iii) मेमोरेण्डम मार्क अप खाता की सहायता से रहतिया के आवागमन पर नजर रखी जा सकती है।

**विभागीय खातों की अनुरक्षण प्रणाली**

विभागीय खातों के अनुरक्षण की दो प्रणालियाँ हैं :

(i) जब सभी विभागों के खाते केवल एक ही पुस्तक सेट में रखे जाते हैं।

(ii) प्रत्येक विभाग के लिये पृथक पुस्तकों के सेट रखे जाते हैं।

**विभागों का वर्गीकरण** : (i) आश्रित विभाग और (ii) स्वतंत्र विभाग

© The Institute of Chartered Accountants of India

**विभागीय व्ययों के आवंटन का आधार**

| क्र. सं. | व्यय | आधार |
|---|---|---|
| 1. | किराया, दर, कर, मरम्मत एवं अनुरक्षण एवं भवन का बीमा | प्रयुक्त फर्श का क्षेत्रफल अथवा समय के आधार पर |
| 2. | लाइटिंग एवं हीटिंग | प्रत्येक विभाग की प्रयुक्त ऊर्जा |
| 3. | विक्रय व्यय | विभागीय विक्रय |
| 4. | आन्तरिक ढुलाई / प्राप्त कटौती | विभागीय विक्रय |
| 5. | मजदूरी एवं वेतन | विभागीय समय आवंटन |
| 6. | पूँजी सम्पत्तियों का अनुरक्षण | विभागीय सम्पत्तियों अथवा समय के आधार पर |
| 7. | प्रशासनिक व्यय | समय के आधार पर अथवा समानता के साथ |
| 8. | श्रम कल्याण व्यय | प्रत्येक विभाग में कर्मियों की संख्या |
| 9. | P/F/ESI अंशदान | प्रत्येक विभाग की मजदूरी एवं वेतन |

अनेक आय एवं व्यय की मदें, मुख्यतः वित्तीय प्रकृति की, जिनका उपयुक्त आधार पर बंटवारा नहीं किया जा सकता है, अतः उन्हें संयुक्त लाभ–हानि खाते से वसूल किया जाता है जैसे ऋणों पर ब्याज, निवेश के विक्रय पर लाभ / हानि।

माल एवं सेवाओं को एक विभाग से दूसरे विभाग को प्रायः तीन आधारों पर वसूल किया जाता है : (i) लागत (ii) प्रचलित बाजार मूल्य, (iii) लागत प्लस के रूप में लाभ का प्रतिशत।

जब अन्तर्विभागीय अन्तरणों में लाभ जोड़ा जाता है, वर्ष के अन्त में रहतिया में शामिल लोडिंग को अंतिम खातों से पूर्व हटाना आवश्यक है जिसके लिये उसमें शामिल प्रत्याशित लाभ को हटाना आवश्यक है इसके लिये उपयुक्त राशि से रहतिया संचय खाते का सृजन संयुक्त लाभ–हानि खाते को डेबिट करके किया जा सकता है।

## स्वयं ज्ञान का परीक्षण

### बहुविकल्पीय प्रश्न

**1.** विभागीय लेखांकन से सहायता मिलती है :

(a) प्रत्येक विभाग के पृथक व्यापारिक परिणामों के मूल्यांकन में

(b) प्रत्येक विभाग के प्रभावी नियोजक एवं नियंत्रण में

(c) (a) और (b) दोनों

**2.** विक्रय कमीशन का विभिन्न विभागों के मध्य निम्न अनुपात में बंटवारा होता है :

(a) प्रत्येक विभाग का अंतिम रहतिया

(b) प्रत्येक विभाग की विक्रीत इकाइयाँ

(c) प्रत्येक विभाग का विक्रय

© The Institute of Chartered Accountants of India

**3.** यदि विभाग A द्वारा B विभाग को माल का अंतरण लागत + 50% के आधार पर किया जाता है, ₹ 9,000 मूल्य के अंतिम रहतिया में कितना रहतिया संचय की राशि होगी :

(a) 3,000

(b) 4,500

(c) 1,500

**4.** माल एवं सेवाओं को एक विभाग द्वारा अन्य विभाग को अंतरित मूल्य :

(a) बाजारा मूल्य

(b) लागत ह्रास लाभ के लिये सहमत प्रतिशत

(c) (a) एवं (b) दोनों

**5.** प्रशासनिक व्ययों का विभिन्न विभागों के मध्य बंटवारे का आधार :

(a) प्रत्येक विभाग में कर्मचारी द्वारा व्यतीत समय

(b) प्रत्येक विभाग में सम्पत्ति का मूल्य

(c) (a) एवं (b) दोनों

**6.** विभिन्न विभागों के मध्य ह्रास के बँटवारे का आधार होता है—

(a) प्रत्येक विभाग में सम्पत्ति का मूल्य

(b) प्रत्येक विभाग का क्रय

(c) प्रत्येक विभाग का विक्रय

**7.** विभिन्न विभागों के मध्य 'किराया' का बंटवारा का आधार है

(a) प्रत्येक विभाग का विक्रय

(b) प्रत्येक विभाग द्वारा प्रयुक्त फर्श का क्षेत्रफल

(c) (a) अथवा (b)

**8.** जब अन्तर्विभागीय अन्तरण में लाभ जोड़ा जाता है, वर्ष के अन्त में अंतिम रहतिया में शामिल (अंतिम खातों से पूर्व) अनुपार्जित लाभ का समापन करने के लिये

(a) उपयुक्त राशि से रहतिया संचय बनाना

(b) संयुक्त लाभ–हानि खाते को डेबिट करके

(c) (a) और (b) दोनों

**9.** यदि कोई संगठन पृथक विभागीय लाभ के निर्धारण में रुचि रखता है, तब

(a) सभी विभागों के खाते एक ही पुस्तक सेट में रखे जाते हैं

(b) प्रत्येक विभाग के लिये पृथक पुस्तकों का सेट रखा जाय

(c) विभागों द्वारा आगे प्रक्रियाकरण के लिये माल का अन्तरण

© The Institute of Chartered Accountants of India

## सैद्धान्तिक प्रश्न

**1.** किसी व्यावसायिक इकाई के लिये विभागीय खाते रखने का महत्व समझाइये।

**2.** निम्नांकित व्ययों को विभिन्न विभागों के मध्य किस आधार पर आवंटित किया जाता है:

(i) किराया, दर, कर मरम्मत एवं अनुरक्षण, भवन का बीमा

(ii) लाइटिंग एवं हीटिंग व्यय (अर्थात् ऊर्जा व्यय)

(iii) विक्रय व्यय

## व्यावहारिक प्रश्न

**1.** विभाग A द्वारा विभाग B को लागत + 50% विभाग B को लागत + 20% पर माल अंतरित किया जाता है। विभाग B द्वारा विभाग A और C को माल का अंतरण विक्रय पर 25% एवं 15% लाभ पर क्रमशः किया जाता है। विभाग C द्वारा विभाग A और B को लागत पर 30% एवं 40% लाभ क्रमशः वसूल किया जाता है।

विभिन्न विभागों का वर्ष के अंत में रहतिया इस प्रकार है :

| | **विभाग A** | **विभाग B** | **विभाग C** |
|---|---|---|---|
| विभाग A द्वारा अंतरण | — | 45,000 | 42,000 |
| विभाग B द्वारा अंतरण | 40,000 | — | 72,000 |
| विभाग C द्वारा अंतरण | 39,000 | 42,000 | — |

प्रत्येक विभाग का अनुपार्जित लाभ और कुल अनुपार्जित लाभ की गणना कीजिये।

**2.** विभाग X द्वारा विभाग Y को माल लागत पर 20% और विभाग Z को लागत पर 10% लाभ पर बेचा जाता है। विभाग Y द्वारा विभाग X एवं Z को माल विक्रय पर क्रमशः 15% एवं 20% लाभ पर बेचा जाता है। विभाग Z द्वारा विभाग X एवं Y को लागत मूल्य पर 20% एवं 25% लाभ पर माल बेचा जाता है।

विभागीय प्रबन्धकों को विभागीय विक्रय से अनुपार्जित लाभ को हटाने से पूर्व लाभ का 10% कमीशन दिया जाता है। विभागीय लाभ प्रबन्धक कमीशन के पश्चात् परन्तु अनुपार्जित लाभ समायोजन से पूर्व निम्नांकित तथ्य :

| | |
|---|---|
| विभाग X | 36,000 |
| विभाग Y | 27,000 |
| विभाग Z | 18,000 |

वर्ष के अन्त में विभिन्न विभागों का अंतिम रहतिया निम्नांकित तथ्य :

| | **विभाग X** | **विभाग Y** | **विभाग Z** |
|---|---|---|---|
| विभाग X से अंतरित | — | 15,000 | 11,000 |
| विभाग Y से अंतरित | 14,000 | — | 12,000 |
| विभाग Z से अंतरित | 6,000 | 5,000 | — |

प्रबन्धकों के कमीशन पश्चात् सही विभागीय लाभ की गणना कीजिये।

© The Institute of Chartered Accountants of India

**3.** Department R sells goods to Department S at a profit of 25% on cost and Department T at 10% profit on cost. Department S sells goods to R and T at a profit of 15% and 20% on sales respectively. Department T charges 20% and 25% profit on cost to Department R and S respectively.

Department managers are entitled to 10% commission on net profit subject to unrealised profit on departmental sales being eliminated. Departmental profits after charging manager's commission, but before adjustment of unrealised profit are as under.

| | | ₹ |
|---|---|---|
| Department | R | 54,000 |
| Department | S | 40,500 |
| Department | T | 27,000 |

Stock lying at different departments at the end of the year are as under :

| | **Deptt. R** ₹ | **Deptt. S** ₹ | **Deptt. T** ₹ |
|---|---|---|---|
| Transfer from Department R | - | 22,500 | 16,500 |
| Transfer from Department S | 21,000 | - | 18,000 |
| Transfer from Department T | 9,000 | 7,500 | - |

Find out the correct departmental profits after charging manager's commission.

**4.** मारुति लि. के अनेक विभाग हैं। प्रत्येक विभाग के पूरित माल की मेमोरेण्डम विभागीय रहतिया खाता को डेबिट किया जाता है। जिसका मूल्य निर्धारण लागत + स्थिर प्रतिशत मार्कअप सहित सामान्य विक्रय मूल्य होता है। मार्कअप की राशि को विभागीय मार्कअप खाते को क्रेडिट किया जाता है। विक्रय मूल्य में कोई कमी (मार्कडाउन) का समायोजन रहतिया खाते और मार्कअप खाते में किया जायेगा। विभाग A का पिछले तीन वर्षों से 25% रहा है। 31 मार्च 20X2 को समाप्त वर्ष के लिये विभाग A की राशियाँ निम्नांकित थीं :

| | ₹ |
|---|---|
| 1 अप्रैल, 20X1 को लागत पर रहतिया | 65,000 |
| क्रय लागत पर | 2,00,000 |
| विक्रय | 3,00,000 |

यह भी ज्ञात हुआ कि :

(1) 31.3.20X2 को समाप्त वर्ष में ₹ 1000 लागत मूल्य पर रहतिया में कमी को अपलिखित किया गया।

(2) 1.4.20X1 को प्रारम्भिक रहतिया में ₹ 600 लागत वाला ऐसा माल शामिल है जिसको वर्ष में बेचा गया और ₹ 600 से विक्रय मूल्य को मार्कडाउन किया गया। शेष रहतिया वर्ष में बेच दिया गया।

(3) वर्ष के दौरान क्रयीत माल को ₹ 1,200 से लागत पर मार्कडाउन किया गया जो कि ₹ 15,000 है। मार्कडाउन रहतिया लागत ₹ 5000, मूल्य का 31.3.20X2 का बिना बिका रहा है।

© The Institute of Chartered Accountants of India

(4) विभागीय अंतिम रहतिया ऐसी लागत पर मूल्यांकित किया गया है जिसमें से मार्कअप/मार्कडाउन का समायोजन नहीं किया गया है। आपसे अपेक्षित है कि आप तैयार करें :

(i) विभाग A के लिये 31 मार्च 20X2 को समाप्त वर्ष के लिये HO की पुस्तकों में व्यापारिक खाता बनाइये

(ii) मेमोरेण्डम रहतिया खाता वर्ष 31.3.20X2 के लिये

(iii) वर्ष के लिये मेमोरेण्डम मार्कअप खाता

## उत्तर/संकेत

**बहुविकल्पीय प्रश्न**

**1.** (c) **2.** (c) **3.** (a) **4.** (c) **5.** (a) **6.** (a)
**7.** (b) **8.** (c) **9.** (b)

**सैद्धान्तिक प्रश्न**

**1.** विभागीय लेखांकन के मुख्य लाभ निम्नांकित हैं :

(i) निष्पादन का मूल्यांकन

(ii) प्रत्येक विभाग की विकास सम्भावनाएं

(iii) पूँजीगत व्यय का न्यायोचितीकरण

(iv) कार्य क्षमता का निर्णयन और

(v) नियोजन एवं नियंत्रण

**2.**

| क्र. सं. | व्यय | आधार |
|---|---|---|
| 1. | किराया दरें और कर मरम्मत एवं अनुरक्षण, भवन बीमा | प्रत्येक विभाग द्वारा प्रयुक्त क्षेत्रफल अथवा समय के आधार पर |
| 2. | लाइटिंग एण्ड हीटिंग व्यय (जैसे ऊर्जा व्यय) | प्रत्येक विभाग द्वारा ऊर्जा का उपयोग |
| 3. | विक्रय व्यय | प्रत्येक विभाग का विक्रय |

**क्रियात्मक प्रश्न**

**उत्तर 1**

**विभागीय अनुपार्जित लाभ एवं कुल अनुपार्जित लाभ की गणना**

| | विभाग A (₹) | विभाग B (₹) | विभाग C (₹) | योग (₹) |
|---|---|---|---|---|
| अनुपार्जित लाभ : | | | | |
| विभाग A | | 45,000 × 50/150 = 15,000 | 42,000 × 20/120 = 7,000 | 22,000 |
| विभाग B | 40,000 × .25 = 10,000 | | 72,000 × .15 = 10,800 | 20,800 |
| विभाग C | 39,000 × 30/130 = 9,000 | 42,000 × 40/140 = 12,000 | | 21,000 |
| | | | | 63,800 |

© The Institute of Chartered Accountants of India

उत्तर 2

शुद्ध लाभ की गणना

| | विभाग X (₹) | विभाग Y (₹) | विभाग Z (₹) |
|---|---|---|---|
| प्रबन्धक कमीशन पश्चात लाभ | 36,000 | 27,000 | 18,000 |
| जोड़ो : प्रबन्धक कमीशन (1/9) | 4,000 | 3,000 | 2,000 |
| | 40,000 | 30,000 | 20,000 |
| घटाओ : रहतिया का अनुपार्जित रहतिया (क्रियात्मक टिप्पणी) | (4,000) | (4,500) | (2,000) |
| प्रबन्धक कमीशन पूर्व लाभ | 36,000 | 25,500 | 18,000 |
| घटाओ : विभागीय प्रबन्धकों को 10% कमीशन | (3,600) | (2,550) | (1,800) |
| प्रबन्धकों के कमीशन पश्चात लाभ | 32,400 | 22,950 | 16,200 |

**क्रियात्मक टिप्पणी :**

रहतिया की स्थिति

| | विभाग X (₹) | विभाग Y (₹) | विभाग Z (₹) | कुल (₹) |
|---|---|---|---|---|
| अनुपार्जित लाभ : | | | | |
| विभाग X | | 1/5 × 15,000 = 3,000 | 1/11 × 11,000 = 1,000 | 4,000 |
| विभाग Y | 0.15 × 14,000 = 2,100 | | 0.20 × 12,000 = 2,400 | 4,500 |
| विभाग Z | 1/6 × 6,000 = 1,000 | 1/5×5,000 = 1,000 | | 2,000 |

**उत्तर 3 Correct departmental profits**

| | Departmens | | |
|---|---|---|---|
| | R ₹ | S ₹ | T ₹ |
| Profit before adjustment of unrealised profits | 54,000 | 40,500 | 27,000 |
| *Add* : Managerial commission (1/9) | 6,000 | 4,500 | 3,000 |
| | 60,000 | 45,000 | 30,000 |
| *Less* : Unrealised profit on stock (Refer W.N.) | (6,000) | (6,750) | (3,000) |
| | 54,000 | 38,250 | 27,000 |
| *Less* : Managers' commission @ 10% | (5,400) | (3,825) | (2,700) |
| Profit after adjustment of unrealised profits | 48,600 | 34,425 | 24,300 |

© The Institute of Chartered Accountants of India

**Working Notes :**

**Value of unrealised profit**

| | ₹ |
|---|---|
| **Transfer by department R to** | |
| S department (22,500 × 25/125) = 4,500 | |
| T department (16,500 × 10/110) = 1,500 | 6,000 |
| **Transfer by department S to** | |
| R department (21,000 × 15/100) = 3,150 | |
| T department (18,000 × 20/100) = 3,600 | 6,750 |
| **Transfer by department T to** | |
| R department (9,000 × 20/120) = 1,500 | |
| S department (7,500 × 25/125) = 1,500 | 3,000 |

उत्तर 4

**(i) मुख्य कार्यालय की पुस्तकों में**

**For the year ending on 31.03.20X2**

| Particulars | ₹ | Particulars | ₹ |
|---|---|---|---|
| To Opening stock | 65,000 | By Sales | 3,00,000 |
| To Purchases | 2,00,000 | By Shortage | 1,000 |
| To Gross Profit c/d (b.f.) | 58,880 | By Closing Stock | 22,880 |
| | 3,23,880 | | 3,23,880 |

**(ii) Memorandum stock account (for Department A) (at selling price)**

| Particulars | ₹ | Particulars | ₹ |
|---|---|---|---|
| To Balance b/d (₹ 65,000 + 25% of ₹ 65,000) | 81,250 | By Profit & Loss A/c (Cost of Shortage) | 1,000 |
| To Purchases (₹ 2,00,000 + 25% of ₹ 2,00,000) | 2,50,000 | By Memorandum Departmental Mark up A/c (Load on Shortage) (₹ 1,000 × 25%) | 250 |
| | | By Memorandum Departmental Mark-up A/c (Mark-down on Current Purchases) | 1,200 |

© The Institute of Chartered Accountants of India

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | By Debtors A/c (Sales) | 3,00,000 |
| | | By Memorandum Departmental Mark-up A/c (Mark Down on Opening Stock) | 600 |
| | | By Balance c/d (b.f.) | 28,200 |
| | 3,31,250 | | 3,31,250 |

**(iii) Memorandum Departmental Mark-up Account**

| Particulars | ₹ | Particulars | ₹ |
|---|---|---|---|
| To Memorandum Departmental Stock A/c (₹ 1,000 × 25/100) | 250 | By Balance b/d (₹ 81,250 × 25/125) | 16,250 |
| To Memorandum Departmental Stock A/c | 1,200 | By Memorandum Departmental Stock A/c (₹ 2,50,000 × 25/125) | 50,000 |
| To Memorandum Departmental Stock A/c | 600 | | |
| To Gross Profit transferred to Profit & Loss A/c | 58,880 | | |
| To Balance c/d [(₹ 28,200 + 400*) × 25/125 – ₹ 400] | 5,320 | | |
| | 66,250 | | 66,250 |

*[₹ 1,200 × 5,000/15,000] = ₹ 400

**क्रियात्मक टिप्पणियाँ**

**(i) विक्रय लागत की गणना**

| | | ₹ |
|---|---|---|
| A | पुस्तकीय विक्रय | 3,00,000 |
| B | जोड़ो : प्रारम्भिक रहतिया में मार्क–डाउन | 600 |
| C | जोड़ो : चालू क्रय में विक्रय में मार्क–डाउन (₹ 1,200 × 10,000 / 15,000) | 800 |
| D | मार्क–डाउन के बिना विक्रय का मूल्य (A + B + C) | 3,01,400 |
| E | घटाओ : सकल लाभ (25/125 of ₹ 3,01,400) मार्क–डाउन के अधीन (₹ 600 + ₹ 800) | (60,280) |
| F | विक्रय की लागत (D-E) | 2,41,120 |

© The Institute of Chartered Accountants of India

**(ii) अंतिम रहतिया का मूल्यांकन**

| | ₹ |
|---|---|
| A प्रारम्भिक रहतिया | 65,000 |
| B जोड़ो : क्रय | 2,00,000 |
| C घटाओ : विक्रय की लागत | (2,41,120) |
| D घटाओ : कमी | (1,000) |
| E अंतिम रहतिया (A + B – C – D) | 22,880 |

**नोट** : यह माना गया है कि प्रश्नों में प्रदत्त मार्कअप की गणना लागत पर प्रतिशत के रूप में की गयी है।

●●

© The Institute of Chartered Accountants of India